प्रा.च्य मैथिली गीत-संगीत ओ ज्ञान-विज्ञानक परम्परा

.डा विजयेन्द्र झा[1],.नीसु कुमारी[2]

[1].पूर्व प्रधानाचार्य, सम्प्रति अध्यक्ष, मैथिली विभाग ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय, मुजफ्फरपूर, बिहार, भारत

[2] एम. ए., यूजीसी- नेट (मैथिली), विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, एल. एन. एम. यू., दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश(Abstract)— प्राचीनकालहिसँ मिथिला सांस्कृतिक रूपेँ समृद्ध रहल अछि। एकर भाषायी समृद्ध इतिहास त्रेतायुगहिसँ विभिन्न प्राचीन ग्रन्थसभमे उपलब्ध अछि। प्राचीनकालमे मिथिला भूखण्डकेँ एकटा तीर्थस्थलक रूपमे मानल जाइत छल। एहिठामक ज्ञान- विज्ञान आ' गीत-संगीत परम्परा विश्वप्रसिद्ध छल। मिथिला अदौसँ शान्तप्रिय क्षेत्र रहल अछि। एहि ठाम तुलनात्मक रूपेँ वाह्य आक्रान्ताक प्रवेश सेहो सभसँ अन्त भेल आ' जखन से भेल तँ एहिठामक विद्वानलोकनि अपन समस्त ज्ञान-विज्ञान आ' सास्कृतिक धरोहरकेँ समेटि-बटोरि पडोसी देश नेपालमे संरक्षित कखबामे सफल भेलाह। इएह कारण अछि जे आदिकालहिसँ ल' आइ धरि मिथिलाक साहित्यिक, धार्मिक आ' सास्कृतिक महत्व तुलनात्मक रूपेँ अन्य प्रान्तसँ समृद्ध बनले अछि। मिथिलामे एकसँ एक तपस्वी ऋषिमुनि, विद्वान् साहित्य सेवी, प्रसिद्ध संगीतकार भेलाह,जनिका बदोलति आइ मिथिला क्षेत्र अपन विशिष्ट पहिचानकेँ बनेबामे अक्षुण अछि। आइ मिथिलाक गीत-संगीत झिझिया, सोहर, समदाउनि, बटगमनी, पराती आदि जँ एक दिसि विश्वपटलपर लोककेँ आकर्षित करैत अछि तँ मैथिली भाषा-साहित्यिक गौरव पुरुष ज्योतिरीश्वर, विद्यापतिसँ ल' अद्यावधिक विश्वक समस्त साहित्यिक पटलपर सशक्ततासँ अपन उपस्थिति दर्ज करएबामे सफल अछि।

निष्कर्षत: कहल जा सकैछ जे आइ जे भाषा, साहित्य आ' सास्कृतिक स्तरपर मैथिलीक अपन बेछप पहिचान अछि तकर मूलाधार प्राच्य मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला, विज्ञान, गीत- संगीत आदिक सुदृढ रहब, सएह थिक। प्रस्तुत आलेखमे संक्षिप्त रूपेँ मिथिलाक मैथिल गीत-संगीत आ' ज्ञान- विज्ञानक परम्पराकेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि, जाहिमे मिथिलाक प्राचीन गौरव गाथाक झाँकी सेहो उपस्थित करबाक प्रयास भेल अछि।

बीज-शब्द (*Index Terms*)—उद्भव, गीत-संगीत, चर्यागीत, छन्द, ज्योतिरीश्वर, ज्ञान-विज्ञान, परम्परा, प्राच्य, रागतरंगिणी, विद्यापति, सामाजिक-सांस्कृतिक,

I. पूर्वपीठिका

प्राचीनकालहिसँ मिथिलाक लोकजीवनमे नृत्य, गीत-संगीत आ' ज्ञान-विज्ञानक महत्वपूर्ण स्थान रहल अछि, मुदा दुखद जे आइ धरि एकर विस्तृत इतिहासक रचना नहि भ' सकल। मिथिलाक भाषामे रचित साहित्य मिथिला-भाषाक साहित्य मैथिली साहित्य कहबैत अछि। तेँ मैथिली, मिथिलाक इतिहास, सभ्यता, संस्कृति आदिकेँ बुझबाक लेल, मिथिलाक सर्वांगीण परिचय जानबाक लेल मिथिलाक स्वरूप, महत्व, वैशिष्ट्य, धार्मिक आ' सांस्कृतिक दृष्टिकोण, भौगोलिक परिस्थिति, परम्परागत विद्या-केन्द्र, मैथिल-गीत संगीतमे प्रयुक्त छन्द- राग, भाषा-साहित्यक उद्भव ओ विकासक परम्पराक विस्तृत कथा बुझबाक हेतु ई आवश्यक जे एहिठामक प्राचीन ज्ञान-विज्ञान आ' संगीत फरम्पराकेँ बुझल जाए। मिथिलाक सामाजिक आ' सास्कृतिक जीवनमे संगीतक विशिष्ट स्थान रहल अछि। इएह कारण अछि जे मैथिली साहित्यक विकास यात्रा गीते सँ प्रारम्भ होइत अछि, आ' तेँ एकर इतिहास गीतमय अछि। अति प्राचीनसकालहिसँ मिथिला मध्य संगीत साधनाकेँ महत्व प्रदान कएल जाइत रहल अछि। यद्यपि अद्यावधि एकर इतिहास पूर्ण रूपेँ स्पष्ट नहि भ' सकल अछि।

मिथिलादेशीय राग-रागिणीक प्राचीनतम प्रमाण सिद्धाचार्यलोकनिक "चर्यागीत"मे भेटैत अछि। मुदा, कर्णाट महाराज 'नान्यदेव' (1097ई.) पहिल व्यक्ति छलाह जे जे सुच्चा मिथिलादेशीय राग-रागिणीक प्रति विशेष आवेशी रहलाह तथा एकर विकास आ' संरक्षण कएलनि। पश्चात् महाराज नान्यदेव 'सरस्वती हृदयालंकार' ग्रन्थक रचना कएलनि, जाहिमे सर्वप्रथम मिथिलादेशीय राग-रागिनीक प्रयोग भेटैत अछि। न्यान्यदेवक पश्चात् संगीतशास्त्रक सुप्रसिद्ध ग्रन्थक रचनाकारक रूपमे 'जयदेव '(1120 ई.) भेलाह, जे मिथिलाक संगीत-पद्धतिक विकास करबामे सभसँ प्रसिद्ध आ' प्रभावशाली व्यक्ति छलाह। जयदेवक प्रसंग प्राचीन विद्वान् 'कुम्भ'क मंतव्य छनि जे- "जयदेवक संगीत त्रुटिपूर्ण छल वा नहि, हुनक मधुर लय ओ स्वर मैथिललोकनिकेँ आनो-आनो लोकक अतिरिक्त एकटा नब प्रकारक काव्य लिखबाक प्रेरणा प्रदान कएलक।"

जयदेवक एहि रचनासँ अनेक साहित्यकार प्रभावित भेलाह। अनेको टीकाकार आ' गीत पद्धतिक अनुकरणकार भेलाह, जाहिमे सभसँ प्रमुख छथि 'विद्यापति ठाकुर'। विद्यापतिक एकटा उपाधि 'अभिनवजयदेव' सेहो प्रसिद्ध अछि।

मैथिलीय संगीतक प्रचार-प्रसारमे गतिशीलताक दृष्टिएँ महाराज हरसिंहदेव / हरिसिंहदेव (1296-1324 ई.)क शासनकाल विशेष महत्व रखैत अछि। महाराज हरसिंहदेव जखन 1324 ई. मे नेपाल भागि गेलाह तखन नेपाल मैथिल- संगीतक केन्द्र-बिन्दु बनि गेल। पश्चात् मिथिलाक संगीतकारलोकनि नेपाल जाए ओहिठामक संगीतकेँ आओर बेसी समृद्ध कएलनि। महाराज हरिसिंहदेव स्वयं संगीतशास्त्रक ज्ञाता छलाह; एहि तथ्यक उल्लेख महाकवि विद्यापति अपन 'पुरुषपरीक्षा'क 'नृत्यविद्य कथा'मे हुनक प्रशंसा एकटा मैथिल संगीतकारक रूपमे कएने छथि -"ओकर गुण केर परीक्षक हरि अथवा हरिसिंहदेवहिटा छथि।" हुनक आश्रित कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर संगीत आ' नृत्यक विशद् वर्णन अति सजीव रूपेँ अपन पोथी 'वर्णरत्नाकर' आ' 'धूर्तसमागम'मे कएने छथि।

मिथिला आ' नेपालमे मैथिल-संगीत परम्परा:

नेपालमे महाराज हरिसिंहदेवक बाद हुनक वंशजलोकनिक संरक्षणमे संगीत- साधना खूब पल्लवित-पुष्पित होइत रहल। नेपालक पहिल संगीतकार सिंहभूपाल छलाह। कतहु-कतहु 'शक्रभूपाल' आ' 'भूपालसिंह' सेहो भेटैत अछि। हिनक पश्चात् 'रत्नधर' आ' दमयन्तीक पुत्र 'जगद्धर' (1474 ई.) क नामोल्लेख भेटैत अछि। इएह जगद्धर 'संगीत-सर्वस्व' नामक पोथीक रचयिता छथि जकर चरचा ओ स्वयं अपन 'बेणीसंहार'क टीकामे अनेक ठाम कएने छथि। रुचिपति उपाध्याय आ' राघव भट्ट सेहो एकर उद्धरण देने छथि।ई पोथी नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखागारमे सुरक्षित राखल अछि। एकर अतिरिक्त अन्य जे मैथिल-संगीत ग्रन्थसभक रचना नेपालमे भेल ताहिमे मल्ल राजालोकनिमे जगज्ज्योतिर्मल्ल (1577-1633 ई.)क नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। ई संगीत आ' काव्य दुहूक विशिष्ट मर्मज्ञ छलाह। संगीत विषयक हिनक अनेक ग्रन्थ उपलब्ध अछि जाहिमे 'स्वरोदयटीका', 'संगीतचन्द्र', 'संगीतभास्कर', 'गीतपंचाशिका', 'संगीतसारार्णव', संगीतसार-संग्रह' 'प्रकीर्णभाषागीतम्', 'दशावतारगीतम्' 'गीतगोविन्द', 'गीत-संग्रह', 'नानागीतम्' , 'नानारागगीत-संग्रह', 'रागमाला', रागभंजन-संग्रह आदि अछि। भाषागीत संग्रहमे हिनक अनेक गीत संकलित अछि। एहि प्रकारेँ देखैत छी जे संस्कृतक विद्वान् रहनहुँ हिनक संगीत-विषयक अनेक ग्रन्थक उल्लेख भेटैत अछि। जगज्ज्योतिर्मल्लक एकटा मैथिली गीत -संग्रह "नान्दोत्पत्तिमृदंगेत्यादि-भाषा" नामे सेहो उपलब्ध अछि, जाहिमे संगीतशास्त्र विषयक विस्तृत वर्णन भेल अछि। हिनक सर्वोत्तम कृति अछि - "दशावतारगीतम" जाहि मध्य ईश्वरक दशो अवतारक भक्तिपरक गीतसभकेँ संग्रहित कएल गेल अछि। एकसरहाँ हिनक गीतक भनितामे भारद्वाज गोत्रीय वंशमणि झाक नाम सेहो पाओल जाइछ; जेना- "प्रकीर्णभाषागीतम्", बंडिल संख्या-1-330K'मे भेटैछ, जे पश्चात् प्रतापमल्लक आश्रयमे चल गेलाह। हिनक अधिकांश गीत भक्तपरक होइत छल। जगज्योतिर्मल्लक संगीतसार-संग्रहमे समकालीन समस्तगीत, नृत्य आ' अभिनयक सार संग्रहीत अछि। हिनक "गीतपंचाशिका" मैथिलीय रागरागिणीक स्वरूप निरूपणक दृष्टिएँ विशेष महत्वपूर्ण ग्रन्थ अछि, कारण मैथिलीय रागरागिणीक प्रामाणिक वर्णन सभसँ पहिने मिथिलामे 'लोचन 'क "रागतरंगिणी"सँ प्राप्त होइत अछ, जकर रचना 1624 शकाब्द अर्थात् 1681 ई. मे भेल छल आ' एकरहुँसँ पूर्व नेपालमे "गीतपंचाशिका"क रचना 1550 शकाब्द अर्थात् 1607 ई. मे, अर्थात् "रागतरंगिणी" सँ 74 वर्ष पहिनहि भेल छल। एहिमे मिथिलाक रागरागिणीक उल्लेख तँ कएले गेल अछि एकर अतिरिक्त लगनी, कोबर, झूमरि आदिक उदाहरण सेहो भेटैत अछि। मिथिलामे प्रचलित विभिन्न तिरहुति गीतसभ गाओल जाइछ, जकर अपन पृथक् पृथक् भास होइछ।बटगमनी, गोआलरी, रास, मान, समदाउनि, चैताबर, मलार, जोग, उचिती, सोहर, बारहमासा, छओमासा, चौमासा, नचारी, महेशवाणी, गोसाउनि, विष्णुपद आदि सेहो अत्यन्त प्रचलित अछि। तिरहुत एकटा श्रृंगारिक गीत थिक, जाहिमे नायक -नायिकाक संयोग वियोगक रागात्मक वर्णन रहैत अछि। एहिमे नायिकाक हाव-भाव, नायक संग मिलन वा वियोगावस्थाक चित्रण रहैत अछि। मूल रूपेँ नायिकाक समस्त हृदयक परिचय एहि रूपक गीतमे भेटैछ। विशेषतः तिरहुत गीतमे नायिकाक अनुरागपूर्ण अन्तस्थलक मर्मस्पर्शी आ' स्वाभाविक उद्घाटन कएल जाइत अछि। एहि गीतक अन्तमे टेकक रूपमे ना, हो रे, सजनी गे, ललना रे आदि लगाओल जाइत अछि। अबुल फजलक "आइने अकबरी"(1558 ई.) मे प्रायः उत्कट प्रेम-गीतिसँ 'तिरहुतिए' अभिप्रेत अछि।

II. मैथिली गीतिक विविध ‘‘राग’’ आ’ ‘‘छन्द’’

मैथिल गीत-संगीतमे प्रचलित विभिन्न "छन्द" आ' "राग" सबहिक नामोल्लेख करब पूर्वक विद्वान् लोकनिक रचना- प्रवृत्तिए बुझाइत अछि। ई छन्दसभ समस्त उत्तर भारतमे प्रसिद्ध भाषा-छन्द थिक। मैथिलीमे प्रयुक्त छन्दसभ यथार्थमे प्राकृत-अपभ्रंश युगक थिक। एहि छन्द सबहिक नामोल्लेख विद्यापतिक "कीर्तिलता", "कीर्तिगाथा", "कीर्तिपताका", सिद्धाचार्यलोकनिक "बौद्धगान ओ दोहा", "प्राकृतपैंगलम", लोचनक "रागतरंगिणी" मनबोधक "कृष्णजन्म", चन्दाझाक "मिथिलाभाषा रामायण" आदिमे कएल गेल अछि। विद्यापति अपन कीर्तिगाथामे आर्या, अरिल्ल, चौपाइ, षट्पद, मालिनी पंचचामर, हरिगीतिका, जयकरी, तोटक, अनुष्टुप, स्रगधरा, उपजाति ; एहि 12 गोट छन्दक उपयोग कएने छथि। एहिना लोचनक "रागतरंगिणी"मे 17 गोट छन्दक उपयोग भेल अछि। एहिमे लोचन छन्दक नामकरण राग-रागिणीक नामक आधारहिंपर कएने छथि। लोचन अपन राग तरंगिणीमे लिखैत छथि - " तन्नामकमेव छन्दः" अर्थात् जएह एहि रागक नाम सएह एहि रागक गेयपदक छन्दहुक नाम। एहि प्रसंग पंडित गोविन्द झा अपन असहमति व्यक्त करैत लिखैत छथि जे " प्राचीन मैथिली साहित्यमे गीतक चलन ततेक ने भ' गेल छल जे छन्दहुक नामक स्थान रागहिक नाम लए नेने छल। एहि प्रवृत्तिक अनुसरण चन्दा झा अपन रामायणमे सेहो कएने छथि। मुदा, एहि छन्द सबहिक विचार कागतपर 'मात्रिक' आ' 'वर्णिक' छन्द जेकाँ नहि भ', गाबि-गाबि राग आदिक ज्ञानहिटासँ संभव भ' सकैछ, तेँ दुरूह बुझाइत अछि।

निष्कर्षतः मैथिली साहित्यमे आदिकाल आ' मध्यकालहिसँ 17 गोट छन्द स्वतंत्र परम्परासँ प्रचलित अछि। ओकरासभकेँ चिन्हब-बुझब मात्र संगीतकारलोकनिसँ संभव अछि। तेँ ई कहब जे मैथिलीमे ओकरा सभक उपयोग होएबे नहि कएल, ई सर्वथा अनुचित। इहो बात सत्य जे आधुनिक कालमे एहि गीतबद्ध छन्दसबहिक उपयोग नहिए जकाँ होइछ;तथापि छात्रलोकनि आ' विशेष कए अनुसंधित्सुलोकनिकेँ एहिसँ परिचित होयब आवश्यक छनि। एतए एहि प्रकारक 96 गोट "गीतिछन्द" (रागछन्द) सबहिक सूची द्रष्टव्य अछि:-

(1) राग भैरवी- राघवीयबडारी, पर्वतीयबडारी, देशीयबडारी, नेपालीयबडारी, भटआलीबडारी, माधवीयबडारी; (2) राग कौशिक- कौशिक, जयदेव, देशाख, देशदेशाख; (3) राग रामकरी- जयदेवीरामकरी, देशरामकरी, शुद्धरामकरी, सुप्रिया (प्रीति) रामकरी; (4) राग ललिता; (5) राग केदार- शुद्धकेदार, केदारकेदार, विहागरकेदार, मलारीय केदार, पर्वतीय(पहाडीय) केदार, कामोदकेदार, केदारमालव; (6) राग कामोद- कामोद मंगल, देवकामोद; (7) श्रीराग; (8) राग वसंत; (9) मालव राग - विंतत मालव, देशमालव, श्रीमालव, धशनश्री(धनछी) मालव, वियोगीमालव, बृहत वियोगीमालव, पर्वतीय (पहाडी) मालव, विजयपुर मालव, जोगियामालव, शारंगीमालव, करुणमालव; (10) राग असावरी- विंतत असावरी, देशी असावरी, सिघली असावरी, जोगिआ असावरी, सिन्धुला असावरी, भोगिनी असावरी, संभोगिनी असावरी, दण्डक असावरी, सरस असावरी, द्राविडी असावरी, अभिरामा असावरी; मनोहरा असावरी ; (11) राग मलावरी- शुद्ध मलावरी, पर्वतीय(पहडिआ मलावरी) मलावरी; (12) राग भूपाली; (13) राग गुर्जरी ; (14) राग विभासी; (15) राग अहिरानी (भीम पलासी)- रम्याभीम पलाशी, धन्याभीमपलाशी, विंततभीमपलासी; (16) राग गोपीवल्लभ; (17)

राग शुद्धशारंगी - देशीसारंगी, अभिरामासारंगी, अनूपशारंगी; (18) राग देशसूहब, शुद्धसूहब, कामसूहब, करूणसूहब, सुन्दरसूहब; (19) राग कोडार- शुद्ध कोडार, वितत कोडार, (20)राग धनछी- शाम्भवी धनछी, शोभन धनछी, मंगली धनछी पंचमसुर(सुस्वर)धनछी श्रीविमिश्र धनछी जोगिआ धनछी; (21) राग गौडी-गौडी मालव, मैथिल गौड मिलव; (22) राग विजय- देवराज विजय, अलानराजविजय, देशराजविजय, कानरराजविजय, मंगलराजविजय, मनमोदराजविजय, देशराजविजय मटिआलीराजविजय; (23) राग नाट- शुद्धनाट, मलारीनाट, शंकूकनाट, कामोदनाट, उत्तमनाट आदि अछि। एकर अतिरिक्त राग विभास, राग काफि, राग तोडी, राग धुरिआमलार, राग ईमनकल्याण, सोहर, बारहमासा आदि "राग" आ' छन्दादिक प्रयोग परवर्ती काव्यमे भेटैत अछि। एकरासभकेँ देशी भाषामे "भास" सेहो कहल जाइत अछि।

III. आधुनिक छन्द सबहिक नाम :

अनेक राग आ' नब-नब छन्दसभ अन्य भारतीय भाषासँ वा अंग्रेजीसँ आयातित भ' मैथिलीमे प्रयुक्त भ' रहल अछि, जेना- 'मुक्तक छन्द', 'अमिताक्षर छन्द' आदि। ई सभ मैथिली साहित्यकारलोकनिक वा कविलोकनिक कर्मकेँ समृद्ध कएलक अछि। प्रो. तंत्रनाथ झा अमिताक्षर आ' चतुष्पदी (Sonnet) तथा ओड (Ode) नीक लिखलनि अछि। एहिना "मुक्तक छन्द"मे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' आ' काशीकान्त मिश्र 'मधुप' उत्तम कोटिक रचना कएलनि अछि। वर्तमानमे बेसी कविलोकनि 'मुक्तवृत्ते'क उपयोग क' रहल छथि।

मैथिलामे, 14म सदीमे, एकटा "घनश्याम" नामक उल्लेख सेहो भेटैत अछि। संभवतः ई ओएह "घनश्याम मल्लिक" छथि जनिक चर्चा "रागतरंगिणी" मे भेल अछि। संगीतशास्त्रक एकटा पोथी मिथिलेश महाराज महेश ठाकुर (1557-90 ई.) क पुत्र शुभंकर ठाकुर (1583-1702 ई.)क "श्रीहस्तमुक्तावली" नामे सेहो भेटैत अछि। उपर्युक्त "घनश्याम', शुभंकर ठाकुरक प्रसिद्ध ग्रन्थक टीका लिखलनि- श्रीहस्तमुक्तावली टीका। एहि शुभंकरकेँ किछु लोक भ्रमवश असम प्रदेशक निवासी मानैत छथि। शुभंकर ठाकुरक एकटा आ'र प्रसिद्ध ग्रन्थ "संगीत दामोदर " सेहो उपलब्ध अछि। हिनक भूरि-भूरि प्रशंसा आनन्दविजय नाटिकाक प्रस्तावनामे रामदास उपाध्याय कएने छथि तथा लोचन (1625-1702 ई.) हिनका एकटा कुशल संगीतज्ञ कहने छथि। लोचनक "रागतरंगिणी" पूर्णतः एही "संगीत दामोदर"क अनुशरण क' कए लिखल गेल बुझाइत अछि।

खण्डवला राजकुलक स्थापनासँ पहिने मिथिलामे संगीतशास्त्रक कोनो पोथीक रचना भेल छल की नहि, तकर कोनो प्रमाण उपलब्ध नहि अछि; मुदा, ओइनवार वंशक राजालोकनि संगीतक प्रेमी छलाह, ताहिमे कोनो संदेह नहि। विशेषतः महाराज शिवसिंह, जनिक आश्रय पाबि कविकोकिल विद्यापति कोमल-कान्त पदावलीक रचना कएलनि। लोचनक रागतरंगिणीक अनुसार जयत/ जयंत नामक संगीतज्ञ हिनकहिँ आश्रयमे रहैत छलाह, जे विद्यापतिक पदसभकेँ संगीतक कसौटीपर कसि ओकरा कर्णप्रिय बनबैत छलाह। "रागतरंगिणी" मे लोचन स्पष्ट रूपेँ लिखने छथि जे विद्यापति जाहि मिथिलापभ्रंशमे रचना कएलनि से मैथिलीय गीत थिक आ' मिथिलाक गीत अपन भाषाक अनुसार विभिन्न नामे विश्रुत अछि। द्रष्टव्य थिक निम्न श्लोक:-

"तीरभुक्त्यन्यदेशेभ्यस्तीर भुक्तौ विलक्षणाः।
स्वरभेदात्परं नाम्ना तेन तेनैव विश्रुताः ॥"

एहि कालखण्डकेँ मैथिल-संगीत-परम्पराक स्वर्णयुग कहल जाइत छल। मिथिला गीत-संगीतक केन्द्र छल। एहिठामक संगीतकारलोनिकेँ देश-विदेशमे ख्याति प्राप्त छलनि आ' हुनकालनिक आदर सर्वत्र होइत छल। एहो उल्लेख भेटैछ जे त्रिपुराक राजालोकनि मैथिल संगीतकारलोकनिकेँ आमंत्रित करैत छलाह।। विद्यापति "पुरुषपरीक्षा"मे लिखैत छथि- " तिरहुतिआ कलानिधि नामक संगीतकार गोरखपुर जाए यशस्वी भेलाह। " एहिना केओ बुढन मिश्र बंगाल गेल छलाह, से परम्परया श्रुत अछि। लोचन अपन "रागतरंगिणी" रचना महाराज महेश ठाकुर आ' राजकुमार नरपति ठाकुर (1690-1704 ई.) क लेल कएने छलाह, जनिका लेल लोचन " धुनिगानसिन्धु" उपाधिक प्रयोग कएने छथि। भारतीय संगीत-धारामे ई श्रेय मात्र लोचने केँ जाइत छनि जे ओ पहिल बेरि मिथिलादेशीय संगीतक स्वतंत्र व्यक्तित्वक शास्त्रीय विवेचन कए ओकर स्वरूपकेँ प्रामाणिक रूपेँ उपनिबद्ध कएलनि तथा मैथिली सबहिक छन्द आ' मैथिली रागरागिणीक अभेद संबंध निरूपित कएलनि। लोचनक "रागतरंगिणी"क पश्चात् कोनो तेहन मैथिली-संगीतक ग्रन्थ उपलब्ध नहि भ' सकल अछि। हुनक एकटा आर ग्रन्यक चर्च किछु इतिहासकार करैत छथि, जे पश्चातक संगीतशास्त्र सबहिक ऐतिहासिक प्रमाण छल; मुदा, से उपलब्ध नहि भ' सकल अछि।

उमापति आ' गोविन्ददास 18म शताब्दीक ख्यातिनामा संगीतकार भेलाह। 19म शताब्दीमे हर्षनाथ झा, चन्दा झा आओर भाना झाक नाम मिथिला देशीय संगीतक राग-रागिणीक अभ्यासकर्ताक रूपमे निस्सन्देह लेल जा' सकैछ। महाराज छत्रसिंह(1808-1839ई.), महाराजकुमार कीर्तिसिंह (मृत्यु- 1880 ई.) आ' बनौलीक राजा कालिकानन्द सिंह शास्त्रीय संगीतकेँ बढओलनि। ओना बीसम शताब्दीमे आबि हिन्दुस्तानी संगीतक प्रभाव आ' पारसी थेटरक चमक-दमकक कारणेँ बेसी लोक ओहि दिसि आकृष्ट होबए लागल आ' मैथिली संगीतकेँ लोक बिसरए लागल अछि।

मैथिल गीत-संगीतमे महिलालोकनिक भूमिका :

मिथिलाक ललनालोकनि मैथिल-संगीतक बड प्रेमी छथि आ' एकर भाससभकेँ कण्ठे-कण्ठे जोगओने छथि। मैथिली साहित्यक प्राचीन कालमे महादेवी लखिमा आ' विद्यापतिक पुत्रवधु चन्द्रकला मैथिल-संगीतकेँ बढओलनि। मैथिली लोक संगीत पिलखबार, शशिपुर, खडका, तरौनी, पोखरौनी, ककरौड, सौराठ, सुगौना, चकौती, सडरा, घोघरडीहा, चिकना-विरौल आदिमे वा एना कहू जे प्रायः मिथिलाक प्रत्येक गाममे अपन विशेष भासक लेल प्रसिद्ध अछि। हाल-सालमे विरौलक रीता-माएक खिस्सा-पिहानी 'नानीक कहानी' शीर्षकक नामे आ' मैथिली ठाकुर जे एखन एखन बिहार विधानसभाक सदस्या चुनल गेलीह अछि, आदिक मिथिलाक लोकगीतसभ सोसल मीडियापर खूब आबि रहल अछि आ' लोक एकरा खूब पसिनो क' रहल अछि। ई ललनालोकनि मिथिला देशीय संगीतकेँ खूब जोगाए कए अपना-अपना कण्ठमे रखने छथि।

निष्कर्षतः संगीतप्रियता मिथिला देशीय चरित्रक विशेषता आदिकालहिमे पनपि चुकल छल। परिणामस्वरूप मैथिली साहित्यक विकासक प्रारंभ गीते सँ होइत अछि।

इएह कारण अछि जे मैथिली साहित्यमे गीतकाव्यक प्रधानता है आ' मिथिला अदौसँ विद्या ओ कलाक केन्द्र रहल अछि।

IV. मिथिलामे ज्ञान-विज्ञानक परम्परा:

प्राचीन मिथिलामे शिक्षाकेँ अति महत्व देल जाइत छल। वैदिककालहिसँ मिथिलाक प्रत्येक ब्राह्मणक घर एकटा पाठशालाक रूपमे छल। आ' प्रत्येक ब्राह्मण गुरू होइत छलाह। ब्राह्मण आचार्यलोकनि द्वारा संचालित गुरुकुलमे ब्रह्मचारीलोकनिक लेल आवासीय व्यवस्था छल। मिलाक गुरुकुलमे पढबाक लेल भारतक सुदूर प्रान्तसभसँ छात्रगण अबैत छलाह। लिपिक विकास भेलासँ पूर्वहि वेदमंत्र छात्रगणकेँ घोँकाओल जाइत छल। ओहि समयक शिक्षाक भाषा संस्कृत छल आ' पाठ्यक्रमक विषय - धर्म, यज्ञ, तप, दर्शन, आत्मा, ब्रह्म, देवता, मोक्ष, पुनर्जन्म, कल्प, नक्षत्र-विद्या, ज्योतिष, तर्कशास्त्र, इतिहास, उपनिषद्, व्याख्यान आदिसँ सम्बन्धित होइत छल। ओहि समयक प्रख्यात शिक्षाविद् लोकनिमे गौतम, कौशिक, याज्ञवल्क्य, शतानन्द, कपिल, कणाद, जैमिनी, विभाण्डक, ऋषिश्रृंग आदि प्रसिद्ध छलाह। परमज्ञानी आ' ज्ञान-प्रवर्तक प्राचीन ऋषिलोकनि अपन अलौकिक बौद्धिक प्रकाशसँ विदेह प्रदेशकेँ आलोकित कएने छलाह। हिनकालोकनिक विविध सारस्वत कृति आ' आदर्श जीवन-मूल्यसँ भारतवर्षक प्राचीन साहित्य सुसमृद्ध भेल अछि।

प्राचीन मिथिलामे स्त्री-शिक्षा तुलनात्मक रूपेँ सुलभ नहि छल। ओहि समय महिलाक लेल आवासीय विद्यापीठ नहि रहबाक कारणेँ सुयोग्य माता-पिता गुरुजन, गुरुपत्नीसभ समय-समयपर हुनकालोकनिकेँ शिक्षा दैत छलीह। जनक नन्दिनी राजकुमारी सीता सहित चारू बहिनि राजमहल परिसरे मे आचार्यलोकनि द्वारा शिक्षा प्राप्त करबाक व्यवस्था छल। विदेहराज जनकक राजसभामे ब्रह्मवादिनी, गार्गी, सुलभा आ' मैत्रेयी सन विदुषी महिलासभ विद्वान् आचार्यलोकनिसँ शास्त्रार्थ करैत छलि। मिथिलामे प्राच्यकालमे व्यावहारिक शिक्षा आ' नैतिक शिक्षाक प्रधानता छल। विदेह राज्यक ओहि स्वर्णयुगमे केओ मूढ, अज्ञानी, अधम, डरपोक, चोर, वा व्यभिचारी नहि होइत छल। पूर्वमे कहल अछि जे आदिकालीन भारतीय इतिहासमे वैदिक आ' उपनिषद् युगे सँ मिथिलाक ख्याति एकटा महत्वपूर्ण धर्मभूमि आ' शिक्षाकेन्द्रक रूपमे रहबाक उल्लेख भेटैत अछि। एहि प्रकारेँ मिथिला भारतक 'ज्ञान-कोश' रहल अछि। दरभंगा जिलाक गजेटिअर्स (1964, पृष्ठ-566)मे पी. सी. राय चौधरी लिखैत छथि जे प्राचीनकालमे यायावर ऋषि -मुनि आ' विद्वान् लोकनिक लेल मिथिला-भ्रमण एकटा तीर्थयात्राक समान छल। विदेहराज जनक अति उदारतपूर्वक विद्वान् लोकनिकेँ संरक्षण दैत छलाह आ' हुनका द्वारा अपन राज्यमे ठानल पैघ धार्मिक अनुष्ठान आ' यज्ञसबक अवसरपर सुदूर प्रान्तसँ आमंत्रित धर्माचार्य एवं विद्वान् लोकनिक जमघट लागि जाइत छल।

विदेह राज्यक जनकवंशीय नरेश स्वयं परम ज्ञानी होइत छलाह। महाभारतयुगीन विदेहराज जनक, वादरायण व्यासक शिष्य छलाह; तथापि व्याजी अपन पुत्र शुकदेवकेँ ब्रह्मविद्याक शिक्षा दिअएबाक लेल परमज्ञानी राजा जनकहि लग पठओलनि।

शिक्षापूर्ण भेलापर छात्रलोकनिक सभ विषयमे मौखिक आ' लिखित परीक्षा लेल जाइत छल, जे "सलाका परीक्षा" कहबैत छल। सफल शिष्यलोकनिकेँ शिक्षाक स्तरक मोताबिक तीन प्रकारक उपाधि प्रदान कएल जाइत छल- 'उपाध्याय', 'महोपाध्याय' आओर 'महामहोपाध्याय'। तात्कालीन समयक मिथिलामे बौद्ध धर्मप्रधान नालन्दा आ' विक्रमशिला सन कोनो पैघ केन्द्रीकृत विश्वविद्यालय उपलब्ध नहि छल। तेँ सम्पूर्ण प्रदेशमे अनेक गुरुकुलक संख्या छल। बेसी ठाम गुरुलोकनिक आवासे पाठशालाक काज करैत छल जे "संस्कृत टोल"क नामे जानल जाइत छल। एहि प्रकारक शिक्षा-केन्द्रसभमे सर्वाधिक ख्यातिपूर्ण मंगरौनी, ठाढी, भौर, रीगा, लोहना, मउ-बेहट यजुआर आदि छल। एहि प्रसंग डा. राम प्रकाश शर्मा ' जर्न आफ दी बिहार रिसर्च सोसाइटी' (पृ. 33/47)क संदर्भ दैत लिखैत छथि-

सीतामढी अनुमंडलक रीगा गाममे 'ऋग्वेद', अथरीमे 'अथर्ववेद' आ' यजुआरमे 'यजुर्वेद'क अध्ययन-अध्यापन हेतु पृथक्-पृथक् विशेष केन्द्र स्थापित छल। एहिना मधुबनी जिलाक मउ-बेहटमे 'यजुर्वेद'क मध्यायनी शाखाक केन्द्र छल आ' भट सिमरी एवं भटपुरामे 'पट्ट पद्धति'(कुमारिल भट्ट) बाला मीमांसा दर्शनक प्रमुख प्रचार-प्रसारक केन्द्र छल। एहि स्थानसभमे, संबद्ध विषय-विशेषज्ञ विद्वान् परम्परागत रूपसँ निवास करैत आ' पठन-पाठन करैत छलाह। तेँ एहि स्थानसभक नामकरण तदनुसार विषयानुकूल भेल, एहन प्रतीत होइत अछि।

महर्षि गौतम 'सामवेद'क तत्वदर्शी आ' प्राचीन न्याय दर्शनक प्रवर्तक आचार्य छलाह। 'नव्यन्याय'क जनक गंगेश उपाध्याय छलाह। ई दुनू मिथिलाक विभूति छलाह। गौतमक 'न्याय-सूत्र' आ' गंगेशक 'तत्त्वचिन्तामणि' अमर कृति अछि। आचार्य वात्स्यायन गौतमक 'न्यायसूत्र'पर भाष्य लिखलनि। तेसर पैघ नैयायिक (तर्कशास्त्री) मिथिलाक उदयनाचार्य छलथि। अन्य प्रसिद्ध नैयायिकलोकनिमे वर्धमान उपाध्याय, पक्षधर मिश्र, वासुदेव मिश्र, रुचिदत्त मिश्र, शंकर मिश्र, वाचस्पति मिश्र, भगीरथ ठाकुर, महेश ठाकुर, देवनाथ ठाकुर, दुर्गादत्त मिश्र, मधुसूदन ठाकुर आदिक नाम अबैत अछि।

व्यासक शिष्य 'जैमिनी' मीमांसा दर्शनक सूत्रधार छलाह, जनिका मिथिलासँ घनिष्ठ सम्बन्ध छलनि। एकर पश्चात् मीमांसा दर्शनक पूर्ण विकास 8म-9म सदीमे मिथिलाक तीनटा प्रमुख आचार्य कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र तथा प्रभाकर मिश्र द्वारा कएल गेल। वेदान्त दर्शनक क्षेत्रमे मण्डन मिश्र रचित 'ब्रह्मसिद्धि' आ' वाचस्पति मिश्र (प्रथम)क रचना 'भामती ' मिथिलाक दूटा अनमोल रत्न अछि।

प्राचीन मिथिलामे स्त्री शिक्षाक सेहो प्रचलन छल जकर प्रमाण वैदिक, औपनिषदिक आ' पौराणिक साहित्य भेटैछ। एकर चरचा पूर्वमे सेहो भेल अछि। याज्ञवल्क्यक संग ब्रह्मवादिनि ऋषिकन्या गार्गीक शास्त्रार्थ आ' हुनकहि संग अपन पत्नी मैत्रयीक मोक्ष-धर्म सम्बन्धी संवादक विवरण 'वृहदारण्यक उपनिषद्'मे वर्णित अछि। 'महाभारत ' ग्रन्थक शान्तिपर्व, अध्याय 320 मे वर्णित अछि जे राजा जनकक संग सुलभा नामक एक विदुषीक 'आध्यात्म ' विषयपर शास्त्रार्थ भेल छलनि। ईसाक पश्चात् मण्डन मिश्रक परम ज्ञानी पत्नी 'भारती' आ' आचार्य शंकरक मध्य भेल दार्शनिक संवादक वर्णन विभिन्न शंकरचरित ग्रन्थसभमे कएल गेल अछि ; मुदा, मिथिलाक कोनो प्रमाणिक ग्रन्थमे एकर वर्णन नहि भेटैछ। तेँ अद्यावधि ई शोधक विषय बनले अछि। मैथिली साहित्यक आदिकालकाल (700-1600 ई.) मे, कर्णाट आ' ओइनवार वंशक शासनकालमे, सेहो संस्कृत शिक्षाकेन्द्रक रूपमे मिथिलाक यशकीर्ति पूर्ववत् स्थापित रहल। 13 म शताब्दीमे मुसलमान आक्रान्ता तुर्की शासक बख्तियार खिलजी द्वारा नालंदा आ' विक्रमशिला विश्वविद्यालयकेँ ध्वस्त कए देलाक पश्चात् शिक्षाकेन्द्र मिथिलहिँमे रहि गेल छल, जतए हिन्दू राजालोकनिक शासन टिकल रहल। शिक्षा, साहित्य आ' कलाक क्षेत्रमे ओहि अवधिमे एतए उल्लेखनीय प्रगति भेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर आ' विद्यापति सन मूर्धन्य विद्वान् लोकनि प्राचीन भाषा-संस्कृति दिसिसँ मुह

फेरि जनभाषा मैथिलीमे गद्य आ' पद्य साहित्यक आधारशिला राखि देलनि जे एकटा युगान्तकारी परिवर्तन छल।

मिथिलामे स्मृति आ' न्यायशास्त्र पढबाक लेल बंगालसँ छात्रगण मिथिलाक शिक्षाकेन्द्रमे अबैत रहैत छल। विद्यापतिक प्रभाव बंगालमे चैतन्य, चण्डीदास आदिपर खूब पडल। मिथिलहिँ जेकाँ बंगालक नवद्विप अर्थात् नदिया मुसलमानक शासनकाल (1198-1747 ई.) मे एकटा सांस्कृतिक आ' शास्त्रीय अध्ययनक केन्द्र छल। पी. सी. राय चौधरीक मत छनि-

" बंगालमे स्मृति आ' न्याय अध्ययनक केन्द्र स्थापित करबाक खगता एहि कारण महसूस कएल गेल जे मिथिलामे अध्ययन करए आएल बंगाली छात्रसबकेँ शिक्षा पूर्ण क' बंगाल आपिस होइत काल कोनो प्रकारक लिखित अध्ययन सामग्री अपना संग ल' जएबाक अनुमति नहि देल जाइत छल। ओ सब मात्र शैक्षिक उपाधि अपना संग ल' जाए सकैत छलाह। ज्ञानक क्षेत्रमे एकाधिकार रखबाक हेतु एहन विधान मिथिलाक शिक्षा केन्द्रसभमे लागू क' देल गेल छल। एही एकाधिकारकेँ समाप्त करबाक उद्येश्यसँ रघुनाथ शिरोमणि नदियामे न्याय आ' स्मृति-अध्ययन केन्द्र स्थापित कएलनि तथापि दुनू प्रान्तक बीच सांस्कृतिक आ' बौद्धिक मधुर संम्बन्ध जे अनेक सदीसँ चलि आबि रहल छल, ओहिपर नब अध्ययन केन्द्र खुजबाक कोनो विपरीत प्रभाव नहि पडल। "

नेपालक संग सेहो मिथिलाक सास्कृतिक, शैक्षणिक, आ' भाषायी सम्बन्ध अटूट छल। पूर्वी भारतमे मुसलमान शासनक स्थापनाक क्रममे विदेशी सेना द्वारा मिथिलापर सेहो आक्रमण होमय लागल। ओहि समय मिथिलाक अधिकांश बुद्धिजीवी पण्डितलोकनि नेपाल पडाए गेलाह। आ' ओतहि शरण ल' साहित्य रचना करैत रहलाह। ओ सब अपना संग प्रायः जतेक परिसक लगलनि से पाण्डुलिपि ल' गेलाह, जाहिमे सँ बेसी कालक्रमे नेपालक पुस्तकालय आ' किछु मठसबमे पहुँचाए देल गेल। स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् एहन किछु पाण्डुलिपिसब जे मैथिली भाषाक तिरहुता लिपिमे छल, शोधार्थी आ' अन्वेषी विद्वान् लोकनि द्वारा आनल गेल।

मिथिलाक प्राचीन शिक्षा-पद्धतिमे एकटा जे त्रुटि छल ओ ई जे शिक्षाक लाभ मात्र सीमित वर्गकेँ भेटैत छल, जेना-ऋषि-मुनि आ' आर्यपुत्र पुत्रीलोकनि। एक समय तँ एहिपर मात्र ब्राह्मणक अधिकार रहि गेल छल। शिक्षाक अधिकार सर्वजन सुलभ नहि छल, एतए धरि जे महिला शिक्षा सेहो सर्वव्यापी नहि छल। तेँ एहि युगक चर्चित विद्वान् आ' साहित्यकारसभमे महिला आ' ब्राह्मणेतर लोकक संख्या बहुत थोड अछि। आधुनिक शिक्षा प्रणाली मिथिलामे अंग्रेजी शासनकालमे प्रारंभ भेल जकरा अन्तर्गत संस्कृतक स्थानपर अंग्रेजी आ' विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल, स्वास्थ्य, प्रशासन, इत्यादि सन समाजोपयोगी आधुनिक विषयसभकेँ सामिल कएल गेल। स्वतंत्रताक बाद शिक्षाक समान अधिकार भारतीय संविधानमे प्रत्येक नागरिककेँ देल गेल आ' तदनुसार सर्वशिक्षा नीति सम्पूर्ण देशमे अपनाओल गेल। परिणाम स्वरूप मिथिलामे आब पुरुष-स्त्री शिक्षाक संगहि साक्षरताक अनुपात तीव्र गतिएँ बढल अछि।

वर्तमानक प्रगतिशील आ' प्रतिस्पर्धाक समयमे रोजगारोन्मुख आधुनिक शिक्षा दिसि स्वाभाविक रूपेँ मिथिलावासीक ध्यान गेलनि अछि। तेँ मिथिलाक असाधारण बौद्धिक प्रतिभा आब पारंपरिक संस्कृत शिक्षाक बान्ह टपि राष्ट्रीय आ' अन्तरराष्ट्रीय पटलपर विज्ञान, प्रशासन, प्रबन्धन, तथा तकनीकी क्षेत्रमे अपन विशिष्ट पहिचान स्थापित क' रहल अछि। आइ देशक तीन शीर्ष केन्द्रीय लोक सेवाक क्षेत्र- आइ. ए. एस. , आइ. पी. एस. तथा आइ. एफ. एस., मिथिलाक प्रखर बौद्धिक प्रतिभाक प्रतिनिधित्व करैत मिथिलाक अनुपात देश भरिमे संतोषजन अछि।

वर्तमानमे बिहार राज्यक मिथिला क्षेत्रमे कुल छओ स्थान दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, मधेपुरा आ' पूर्णियाँसँ विश्वविद्यालयसभ संचालित भ' रहल अछि; तथापि प्रतिवर्ष एहिठामसँ हजारो मेधावी छात्र सबहिक पलायन प्रायः तकनीकी, प्रबंधकीय आ' चिकित्सीय शिक्षा प्राप्त करबाक लेल देशक महानगरसभ- दिल्ली, बंगलोर, चेन्नइ, पूना, कोटा, वनारस इत्यादि स्थानसभपर भ' रहल अछि; जकर एक मात्र मूल कारण अछि जे एहिठामक विश्वविद्यालयसभमे गणवत्तापूर्ण शिक्षण-कार्य (शिक्षा-व्यवस्था) क अभाव अछि। संगहि आजुक युवा पीढी प्राच्य शिक्षाक आधार संस्कृत मात्र पढि शिक्षक नहि बनय चाहैत छथि। ओ लोकनि तकनीकी शिक्षा ग्रहण क' देश-विदेशमे अपन उपस्थिति दर्ज कराबए चाहैत छथि। तेँ खगता अछि जे मिथिला क्षेत्रक शिक्षण-व्यवस्थाकेँ सुधारल जाए आ' ई तखनहि संभव भ' सकैछ जखन शासन आ'समाज एहि लेल सजग होएत।

V. उपसंहार

प्राचीनकालहिसँ मिथिला सांस्कृतिक रूपेँ समृद्ध रहल अछि। एकर भाषायी समृद्ध इतिहास त्रेतायुगहिसँ विभिन्न प्राचीन ग्रन्थसभमे उपलब्ध अछि। प्राचीनकालमे मिथिला भूखण्डकेँ एकटा तीर्थस्थलक रूपमे मानल जाइत छल। एहिठामक ज्ञान-विज्ञान आ' गीत-संगीत परम्परा विश्वप्रसिद्ध छल। मिथिला अदौसँ शान्तप्रिय क्षेत्र रहल अछि। एहि ठाम तुलनात्मक रूपेँ वाह्य आक्रान्ताक प्रवेश सेहो सभसँ अन्त भेल आ' जखन से भेल तँ एहिठामक विद्वानलोकनि अपन समस्त ज्ञान-विज्ञान आ' सास्कृतिक धरोहरकेँ समेटि-बटोरि पडोसी देश नेपालमे संरक्षित कखबामे सफल भेलाह। इएह कारण अछि जे आदिकालहिसँ ल' आइ धरि मिथिलाक साहित्यिक, धार्मिक आ' सास्कृतिक महत्व तुलनात्मक रूपेँ अन्य प्रान्तसँ समृद्ध बनले अछि। मिथिलामे एकसँ एक तपस्वी ऋषिमुनि, विद्वान् साहित्य सेवी, प्रसिद्ध संगीतकार भेलाह,जनिका बदोलति आइ मिथिला क्षेत्र अपन विशिष्ट पहिचानकेँ बनेबामे अक्षुण अछि। आइ मिथिलाक गीत-संगीत झिझिया, सोहर, समदाउन, बटगमनी, पराती आदि जँ एक दिसि विश्वपटलपर लोककेँ आकर्षित करैत अछि तँ मैथिली भाषा-साहित्यिक गौरव पुरुष ज्योतिरीश्वर, विद्यापतिसँ ल' अद्यावधिक विश्वक समस्त साहित्यिक पटलपर सशक्ततासँ अपन उपस्थिति दर्ज करएबामे सफल अछि।

निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे आइ जे भाषा, साहित्य आ' सास्कृतिक स्तरपर मैथिलीक अपन बेछप पहिचान अछि तकर मूलाधार प्राच्य मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला, विज्ञान, गीत- संगीत आदिक सुदृढ रहब, सएह थिक। प्रस्तुत आलेखमे संक्षिप्त रूपेँ मिथिलाक मैथिल गीत-संगीत आ' ज्ञान- विज्ञानक परम्पराकेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि, जाहिमे मिथिलाक प्राचीन गौरव गाथाक झाँकी सेहो उपस्थित करबाक प्रयास भेल अछि।

संदर्भ सूची:

[1] झा डा. विजयेन्द्र, 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल), मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन

[2] मिश्र डा. जयकान्त, 1988, मैथिली साहित्यक इतिहास, नइ दिल्ली: साहित्य अकादेमी

[3] मिश्र डा.कृष्णकान्त, 1955, मैथिली साहित्यक इतिहास, दरभंगा

[4] 'श्रीश' डा. दुर्गानाथ झा, 1968 (परिवर्द्धित संस्करण 1991), मैथिली साहित्यक इतिहास, दरभंगा : भारती पुस्तक केन्द्र

[5] 'व्यथित' डा. बालगोविन्द झा, 1988 (द्वि. संस्करण) मैथिली साहित्यक इतिहास, दरभंगा : मिथिलांचल प्रकाशन

[6] झा, डा. दिनेश कुमार, 1979, मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, पटना: मैथिली अकादमी

[7] मिश्र प्रो.मायानन्द, 1914, मैथिली साहित्यक इतिहास,

[8] उपाध्याय आचार्य बलदेव, 1955, वैदिक साहित्य और संस्कृति, वाराणसी : शारदा संस्थान

[9] कविचन्द्र विरचित 'मिथिलाभाषा रामायण', 1955, दरभंगा: प्रेस कम्पनी लिमिटेड; 1999, नइ दिल्ली: साहित्य अकादेमी

[10] गुरुमैता डा. भुवनेश्वर सिंह, 2007, वर्णरत्नाकरमे चित्रित पूर्व मध्ययुगीन भारत, पटना: मैथिली अकादमी

[11] ग्रिअर्सन जार्ज अब्राहम, 1882, हरिवंश (मनबोधकृत) Vol. 51, पार्ट-2, नम्बर-1, जर्नल आफ द' एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल

[12] चौधरी डा. राधाकृष्ण, 1976, ए सर्वे आफ मैथिली लिटरेचर, पटना

[13] झा डा. सुभद्र (सं), 1954, विद्यापति-गीत-संग्रह वा द' साग्स आफ विद्यापति, बनारस : मोतीलाल बनारसी दास

[14] झा डा. रामदेव (सं.), 1988, जगज्ज्योतिर्मल्लकृत 'दशशावतार नाट्यम्' ओ 'सोडष गीत', दरभंगा: मिथिला रिसर्च सोसाइटी

[15] (15.) झा डा. विजयेन्द्र (सं.), 2025, विद्यापतिकृत 'कीर्तिगाथा', दिल्ली: माण्डा पब्लिशर्स

[16] झा, डा. रामदेव (सं.), 1970, कीर्तिलता (विद्यापतिकृत), पटना: पटना विश्वविद्यालय मैथिली विकास कोष

[17] झा राजेश्वर, 1968, मैथिली साहित्यक आदिकाल, रसुआर, सहरसा

[18] IJCRT-293414, Sept. 2025, MAITHILI: NURSERY RHYMES, RIDDLES, APHORISMS & PROVERBS, Article by Dr. Bijayendra Jha, IJCRT (International Journal of Creative Research Thoughts, ijcrt. org), ISSN Aproved Journal:2320-2882, Impact Factor:7.97, ESTD Year:2013, Volum:13, Issu-9, Paper Id-IJCRT-293414, Unique Identification (Paper ID) No- IJCRT 2509188, Page No.-b539-b543.

[19] झा प्रो. रमानाथ (सं.), 1968 (पुनर्मुद्रण), प्रचीन गीत, डैनवी रोड, दरभंगा: श्री रविनाथ झा

[20] झा विजयेन्द्र, 2021, मैथिली व्याकरण ओ रचना, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन

[21] झा गोविन्द, 1960, मैथिली छन्दशास्त्र, भगत सिंह चौक दरभंगा : मिथिला पुस्तक केन्द्र

[22] झा शशिनाथ (सं. हिन्दी अनु.), कीर्तिलता, दीप, मधुबनी : डा. शशिनाथ झा, विद्यावाचस्पति

[23] झा उमानाथ (सं.), वि. सं. 2029(1971ई.), नइ दिल्ली : साहित्य अकादेमी

[24] ठाकुर शिवनन्दन (सं.), 1941, महाकवि विद्यापति (हिन्दी), लहेरियासराय, दरभंगा: पुस्तक भंडार

[25] ठाकुर उपेन्द्र, 1980, मिथिलाक इतिहास, पटना: मैथिली अकादमी

[26] ठाकुर डा. वीणा, 2008, इतिहास दर्पण, दरभंगा : श्री रामरतन झा

[27] धीरेन्द्र धीरेश्वर झा, 2036 वि. सं. (1979), काव्यशास्त्रक रूपरेखा, अशोक राजपथ, चौहट्टा, पटना : जनरल बुक एजेन्सी

[28] डा. नरेन्द्र, डा हरदयाल (सं.), 1973, हिन्दी साहित्य का इतिहास, दरियागंज, नइ दिल्ली : मयूर बुक्स

[29] प्रसाद राजाराम, 2019, मैथिली लोकसाहित्यक विस्तृत इतिहास, लहेरियासराय, दरभंगा : अभिषेक प्रकाशन

[30] झा डा. विजयेन्द्र, 2020, मैथिली लोकसाहित्यक समाजशास्त्रीय अध्ययन (अप्रकाशित शोध-प्रबंध), मैथिली विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

[31] प्रसाद शिवनन्दन, 1964, मात्रिक छन्दों का विकास, पटना : बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्

[32] भगत रतिपति, 1958, गीत गोविन्द (सं. परमानन्द झा), पटना : बिहार रिसर्च सोसाइटी जर्नल

[33] मिश्र जयकान्त (सं.), 1960, कीर्तिपताका (विद्यापतिकृत), इलाहाबाद : अखिल भारतीय मैथिली समिति

[34] मिश्र जयकान्त, 1951, ए इन्ट्रोडक्शन टु फोक लिटरेचर आफ मिथिला, प्र. यूनिवर्सिटी आफ इलाहाबाद स्टडीज

[35] मिश्र डा. जयमन्त, 1977, मैथिली नाटक पर संस्कृतक प्रभाव, पटना : मैथिली अकादमी

[36] मिश्र आनन्द आ' पं. गोविन्द झा (सं), 1980, वर्णरत्नाकर (ज्योतिरीश्वरकृत), पटना: मैथिली अकादमी

[37] मिश्र रत्नेश्वर (मै. अनु.) तमिल साहित्यक इतिहास (मूल- वरदराज), नइ दिल्ली: साहित्य अकादेमी

[38] मिश्र डा. विश्वेश्वर (सं.), चन्द्र रचनावली, पटना :मैथिली अकादमी

[39] मिश्र श्री जगदीश, 1970, शास्त्रीय निबंध, दरभंगा : अनन्त प्रकाशन

[40] मल्लिक डा. वीरेन्द्र, 2016, ' प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति, पटना : शेखर प्रकाशन

[41] मजुमदार डा. विमान बिहारी, 1959, श्री चैतन्य चरितेर उपादान, कलकत्ता

[42] मिश्र श्री रमाकान्त(मै. अनु.) हेमलेट (मूल: विलियम शेक्सपियर), दरभंगा : श्री नलिनी कान्त मिश्र

[43] ANTIQUITY AND DEVELOPMENT OF MAITHILI LANGUAGE AND LITERATURE: AN ANALYSIS (Article: By Dr. Bijayendra Jha) IJRDET- 1125_165 International Journal of Recent Development inEngineering and

Technology (An ISO Certified Journal, A Peer Reviewed Refered Journal,) ISSN: 2347-6435, Impact Factor 7.89, Volume 14, Issue 11, 30 November, 2025, Paper Id: 1125_165
Registration Id:Email ID: ijrdet@gmail.com, Website: www.ijrdet.com, page381-387

[44] 'सुमन' प्रो. सुरेन्द्र झा (सं.), 1984, कृष्णजन्म (मनबोधकृत), दरभंगा : मैथिली मंदिर